नृत्य विशारद (प्रथम खंड)
Nritya Vishard Part-I (Fourth Year)
कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) कत्थक नृत्य के विभिन्न घरानों का परिचय और उनका तुलनात्मक अध्ययन।

(२) कत्थक, मणिपुरी, कथकली, भरत नाट्यम आदि भारतीय नृत्यों के सम्बन्ध में ज्ञान।

(३) उत्तर भारत के लोक नृत्यों का अध्ययन एवं उनका भविष्य।

(४) नृत्य में रस की उपयोगिता।

(५) अभिनय का विस्तृत अध्ययन। नृत्य में अभिनय का स्थान एवं उनके विभिन्न प्रकार के विषय में विस्तृत ज्ञान।

(६) नायक एवं नायिका के विभिन्न प्रकार का ज्ञान।

(७) ताल की उत्पति एवं नृत्य में उनकी उपयोगिता।

(८) निम्नलिखित नृत्यकारों की जीवनी और योगदान-
उदय शंकर, मीनाक्षी सुन्दरम पिलै तथा गुरू अमुबी सिंह।

(९) निबन्ध- क: नृत्य एवं दूसरी भारतीय कलाएं
ख: योग और नृत्य के बीच भेद।

(१०) कलश (घडा), भ्रमरी, पक्षी परण, प्रमिलू, निकास, एक पाद भ्रमरी चलनचारी भाव, अनुभाव, स्तुति, मुद्रा आदि की परिभाषा।

(११) कत्थक नृत्य में रंग भूषा (Make up) और वेशभूषा (Dress)का ज्ञान।

(१२) पाठयक्रम में निर्धारित तालों में टुकडा, तोडा, परण, चक्करदार परण आदि ठाह, दुगुन और चौगुन लय में भातखंडे और विष्णु दिगम्बर पद्धति में लिखनें का अभ्यास।

क्रियात्मक (Practical)

(१) **त्रिताल में** - क: कठिन ततकार और उनके विभिन्न प्रकार,
ख: दो चक्करदार परन,
ग: तिस्त्रजातिकी परन,
घ: दो प्रमिलू तोडा,
ड: तीन कवित्त,
च: होली, माखन चोरी, कालीया दमन, घूघंट, मटकी आदि का गत के माध्यम से प्रदर्शन।

(२) **एकताल में**- क: तत्कार और उनके प्रकार।
ख: दो आमद।
ग: दो परन।
घ: दो चक्करदार परन।
ड: छ: तोडे।

(३) **आडाचारताल**- क: विभिन्न लयकारियों में तत्कार,
ख: एक आमद,
ग: एक सलामी,
घ: दो परन।

(४) त्रिताल, एकताल,झपताल और धमार ताल में नृत्य का विशेष अभ्यास।

(५) त्रिताल एकताल, झपताल और धमार तालों की ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारी तबले पर बजाने का अभ्यास।

(६) सूलताल, रूपक, सवारी ताल में तत्कार सहित प्रत्येक में दो तोडों का अभ्यास।

(७) नृत्य में आड़ी कुवाडी लय का प्रदर्शन।

(८) टुकडा, परन, चक्करदार परण आदि विभिन्न लयकारी में हाथ पर ताली-खाली दिखलाकर बोलनें का अभ्यास तथा नृत्य में प्रदर्शन की क्षमता।

(९) त्रिताल, झपताल, एकताल में हारमोनियम पर नगमा बजानें का अभ्यास।

टिप्पणी-पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

नृत्य विशारद पूर्ण
Nritya Vishard Final (Fifth Year)
कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक: ३०० शास्त्र-१००,प्रथम-प्रश्न-पत्र-५०
द्वितीय प्रश्न-पत्र-५०
क्रियात्मक-१२५
मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न-पत्र (First Paper)

(१) पूर्ववर्ती वर्षों में निर्धारित सारे पारिभाषिक शब्दों का पूर्ण अध्ययन।

(२) मणिपुरी, भारत नाट्यम और कथकली नृत्य में रंग भूषा (Make up) वेशभूषा (Dress)का ज्ञान।

(३) भारत में प्रचलित सब नृत्य शैलियों का परिचय एवं साधारण ज्ञान।

(४) मध्य भारत के लोक नृत्य एवं उनके विकास के सम्बन्ध में ज्ञान।

(५) नृत्य नाटिका प्रस्तुत करने के नियम।

(६) पाश्चात्य नृत्य नाट्क (बैले डांस) के सम्बन्ध में विशेष अध्ययन।

(७) प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नृत्यों में प्रयोग होने वाले समस्त वाद्य यन्त्रों का ज्ञान।

(८) भिन्न-भिन्न कालों में भारतीय नृत्य के परिवर्तन का इतिहास।

(९) एकल नृत्य और समूह नृत्य का अध्ययन।

(१०) नृत्य विषयक ग्रंथों का अध्ययन।
(प्राचीन से आधुनिक काल तक)

(११) भगवान विष्णु के दशावतार रूपों का वर्णन।

(१२) आधुनिक नृत्यकारों का परिचय विशेषता और योगदान।

(१३) निबन्ध- क:लोक नृत्य और शास्त्रीय नृत्य,
ख: नृत्य के विकास में विभिन्न घरानों का योगदान।
ग: भारतीय वृन्दवादन,

घ: भारतीय नृत्य के आदर्श,
ड: विदेश में भारतीय नृत्य की जन प्रियता।
च: भारतीय नृत्य में वृन्दवादन का स्थान।

(१४) भारतीय नृत्य में अंग-प्रत्यंग के संचालन का ज्ञान।

(१५) क: लोक नृत्य में कबित और ठुमरी का स्थान।
ख: ठुमरी में कवित, रस तथा भाव का स्थान।

(१६) बैले और आपेरा के सम्बन्ध में अध्ययन।

(१७) ताण्डव और लास्य का ज्ञान।

(१८) भारतीय रंगमंच का इतिहास, रंगमंच रचना, विद्युत व्यवस्था, रंग भूषा इत्यादि के विषय में विस्तृत ज्ञान।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) अभिनय और उसके प्रकार।

(२) ताल की उत्पत्ति और उसके दस प्राण।

(३) दक्षिणी ताल पद्धति का विशेष अध्ययन एवं दक्षिणी तालों को उत्तरी पद्धति में तथा उत्तरी तालों को दक्षिणी पद्धति में लिखनें की क्षमता।

(४) भारतीय नृत्य की समस्त संयुक्त हस्तमुद्राओं के सम्बन्ध में अध्ययन।

(५) क: निम्नलिखित मुद्राओं के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान-
जाति (Cast) दशावतार, देवी एवं देवता।
ख: उपयुक्त विषयों ने हिन्दू संस्कृति में किस प्रभाव का विस्तार किया है, उनके सम्बन्ध में ज्ञान।

(६) विभिन्न तालों में टुकडा परन, तोडा चक्करदार परन इत्यादि विभिन्न लयकारी में लिपिबद्व करनें का अभ्यास।

(७) पाठयक्रम में निर्धारित सब तालों का तुलनात्मक अध्ययन प्राचीन काल की हस्त मुद्राओं का ज्ञान।

(८) क: नृत्य में अध्यात्मिकता का स्थान।

(९) ख: रस एव रंग,

क्रियात्मक (Practical)

(१) तीन ताल में - क: दो तिस्त्र, जाति की आमद,
ख: दो मिश्र जाति की परन,
ग: दो प्रमलू परन,
घ: चार कवित।

(२) सवारी, सूलताल और रूपक ताल में-
क: तत्कार और उसके प्रकार,
ख: एक आमद,
ग: पांच तोडे,
घ: चार चक्करदार परन,
ड़: दो कवित।

(३) निम्नलिखित किन्ही चार तालों में तत्कार, टुकडा और परन का अभ्यास-मत्त (१८ मात्रा), पंचम सवारी (१५ मात्रा), अष्ट मंगल (११ मात्रा) शिखर (१७ मात्रा), लक्ष्मी (१८ मात्रा)।

(४) निम्नलिखित गत भाव का प्रदर्शन करने का अभ्यास-
द्रोपदी चीरहरण, पनघट, अहिल्या उद्धार, सती अनुसूया, विश्वामित्र मेनका, अभिसारिका, शिवपूजन इत्यादि।

(५) ठुमरी और भजन गायन में भाव के साथ नृत्य प्रदर्शन।

(६) निम्नलिखित विषयों का पृथक-पृथक नृत्य में प्रदर्शन।
क: लास्य ताण्डव।
ख: नृत्य-नृत-नाटय।
ग: नायक-नायिका।

(७) पाठयक्रम में निर्धारित सब तालों की ठाह, दुगुन, चौगुन, आड़ और बिआड आदि लयकारी हाथ पर ताली-खाली दिखलाकर बोलने का अभ्यास तथा नृत्य के द्वारा प्रदर्शन की क्षमता।

(८) पाठयक्रम में निर्धारित टुकड़ा, परन इत्यादि के बोल ताली-खाली द्वारा बोलनें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।